यह कविता वरिष्ठ कवि नंद चतुर्वेदी ने विशेष रूप से 'शिक्षा-विमर्श' को दी है । यह गुजरात में पिछले महीने आये भूकम्प में मृत बच्चों के लिए शोक गीत है । इस दिन वे बच्चे गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय उत्सव में शरीक थे या फिर प्रभात-फेरियों में शामिल । 'शिक्षा-विमर्श' पत्रिका परिवार गुजरात की शोकान्तिका में काल-कलवितों को इस कविता के माध्यम से श्रद्धांजलि व्यक्त करता है । हालांकि इस त्रासदी के लिए कोई भी शब्द नितान्त आधे-अधूरे होंगे ।

वे बच्चे

❑ **नंद चतुर्वेदी**

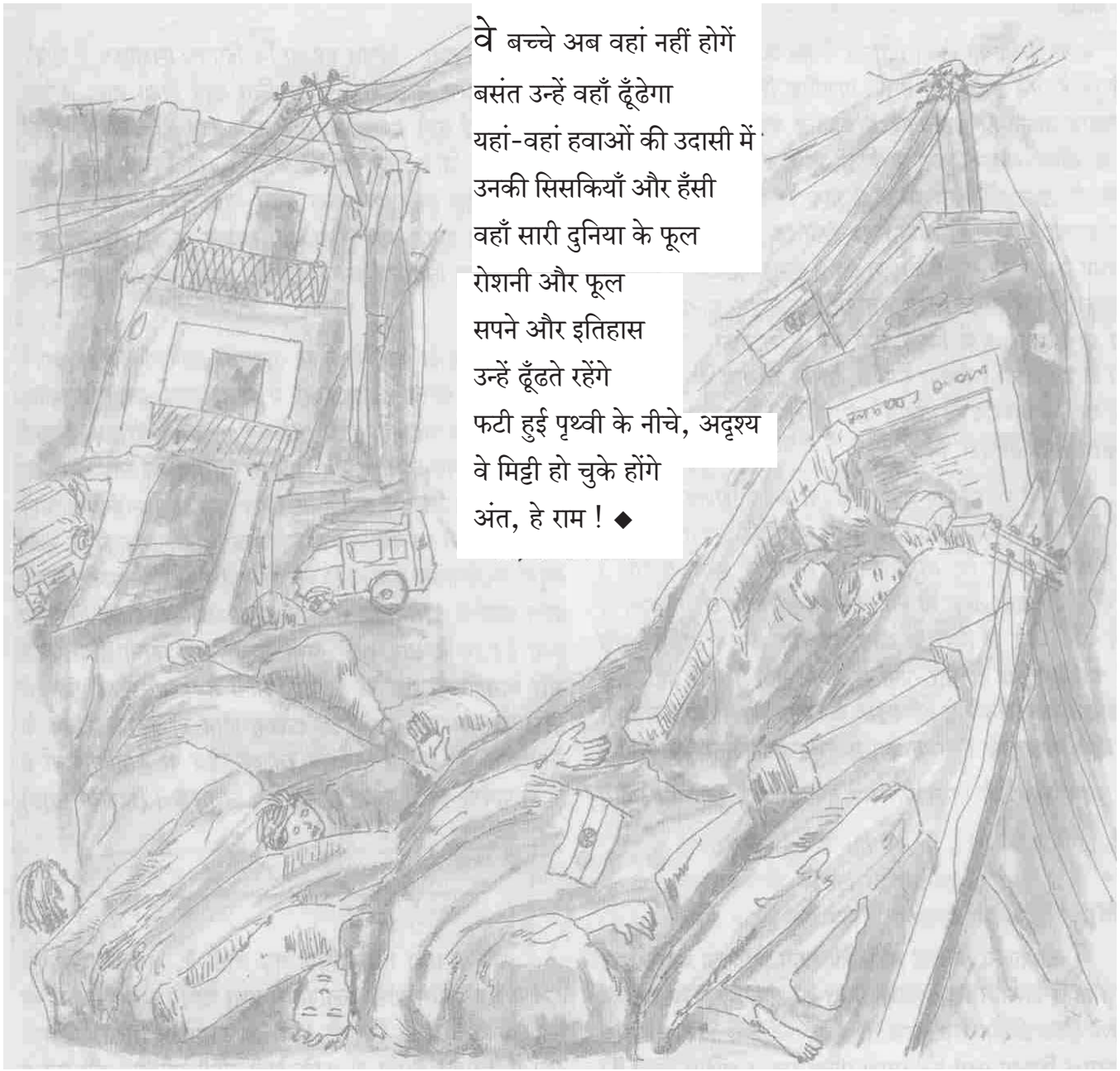

वे बच्चे अब वहां नहीं होगें
बसंत उन्हें वहाँ ढूँढेगा
यहां-वहां हवाओं की उदासी में
उनकी सिसकियाँ और हँसी
वहाँ सारी दुनिया के फूल
रोशनी और फूल
सपने और इतिहास
उन्हें ढूँढते रहेंगे
फटी हुई पृथ्वी के नीचे, अदृश्य
वे मिट्टी हो चुके होंगे
अंत, हे राम ! ◆